एक सच्ची कहानी

अनपढ़ शालिनी एक टीचर बनी

पूना में कामकाजी औरतों का एक होस्टल था। रसोई में काम करने वाली 5-6 औरतें अधेड़ उम्र की थीं। उनमें लगभग 22 साल की शालिनी भी थी। धीरे-धीरे उसकी कहानी हमें पता चली। शालिनी चौदह साल की थी, जब उसकी शादी गोविंद से हुई। उसके मायके और ससुराल दोनों जगह खेती का काम होता था। ससुराल में विधवा सास और दो देवर थे। शादी के दो सालों के भीतर उसके एक बेटा भी हो गया। समय के साथ वह और उसका पति घुल-मिल गए। गोविंद उससे सलाह मशविरा भी करने लगा। बस, सास को यह खल गया। डर कि कहीं लड़का हाथ से न निकल जाए। उस बेवकूफ औरत ने दूसरे बेटे की मदद से गोविंद को ज़हर दे दिया। उसकी मौत हो गई।

रोती-बिलखती, डरी शालिनी भाई के साथ मायके आ गई। इस बीच बापू की मौत हो चुकी थी। मां ने शालिनी को सीने से लगाया। सास व देवर पर मुकदमा चला। देवर को सज़ा भी हो गई। सास को औरत होने के नाते छोड़ दिया गया।

शालिनी को मायके में प्यार मिला। मगर जब उसके भाई के ब्याह की बात चली, वह सोच में पड़ी। पता नहीं भाभी कैसी आए। फिर भाई के अपने बाल-बच्चे होंगे। वह उन पर बोझ नहीं बनना चाहती थी। अनिल की पढ़ाई का भी सवाल था।

गांव में एक टीचर थी। शालिनी ने उनसे बात की। बताया कि वह अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। इस तरह शालिनी को पूना में काम मिल गया। भाई और मां नहीं चाहते थे कि शालिनी काम करे। पर वह अपने फैसले पर अड़ी रही।

होस्टल में अरुणा जी रहती थीं। वह बैंक में काम करती थीं। शाम को पाठशाला में मुफ्त पढ़ाती थीं। उन्होंने शालिनी को उसमें दाखिला दिला दिया। एक साल में दो-दो क्लास पास करके वह आगे बढ़ती गई। अरुणा जी ने फीस भरी। वह आठवीं पास हो गई। फिर दसवीं और बारहवीं। फिर उसने पढ़ाने का डिप्लोमा लिया। अब शालिनी लगभग 900 रु० महीना कमाती है, अपने बेटे को साथ रखती है। अनिल अब दस साल का है। गांव में शालिनी की इज्ज़त है। वहां उसे सब शालिनी ताई के नाम से बुलाते हैं। वह अनिल को अच्छी तरह पढ़ाना चाहती है। वह बहू भी पढ़ी लिखी लाएगी।

कुछ सवाल—1. शालिनी पति के मरने के बाद ससुराल में रहती तो क्या होता?

2. उसके जीवन में बदलाव कैसे आया?

3. कारणों की सूची बनाएं।

4. शालिनी को गांव में कैसे इज्ज़त मिली—चर्चा करें।

5. खुद पढ़ने से शालिनी की सोच में क्या बदलाव आया?

वसुधा धगमवर

□